न्यूज़ टुडे

एक अध्ययन में भारत में बाघों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि का श्रेय प्रमुख संरक्षण कारकों को दिया गया

ज्ञातव्य है कि भारत से लगभग **90 प्रतिशत बाघ आबादी अपने ऐतिहासिक पर्यावास क्षेत्र से विलुप्त** हो गई थी। हालांकि, संरक्षण प्रयासों से इनकी संख्या फिर से बढ़ रही है। वर्तमान में वैश्विक बाघ आबादी का लगभग **75 प्रतिशत भारत** में है।

- वर्ष 2022 में, भारत ने देश में बाघों की आबादी को सफलतापूर्वक **दोगुना** कर लिया था। इसे **TX2 लक्ष्य** के रूप में भी जाना जाता है। इस प्रकार, भारत में बहुत अधिक **जनसंख्या घनत्व** होने के बावजूद भी भारत ने **ग्लोबल टाइगर रिकवरी प्रोग्राम के लक्ष्य** को हासिल किया है।

अध्ययन के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर

- **बाघ-अधिकृत क्षेत्रों (Tiger-occupied areas) में वृद्धि हुई है:** इसमें 2006 से 2018 तक **40,000 वर्ग किमी से अधिक के क्षेत्र** के साथ लगभग 30% की वृद्धि हुई है।
- **संरक्षित क्षेत्र:** बाघ-अधिकृत 85% क्षेत्र संरक्षित क्षेत्रों के अंतर्गत आते हैं।
- **मानव-बाघ सह-अस्तित्व:** बाघों के 45% पर्यावास क्षेत्रों में लगभग 60 मिलियन लोग रह रहे हैं।

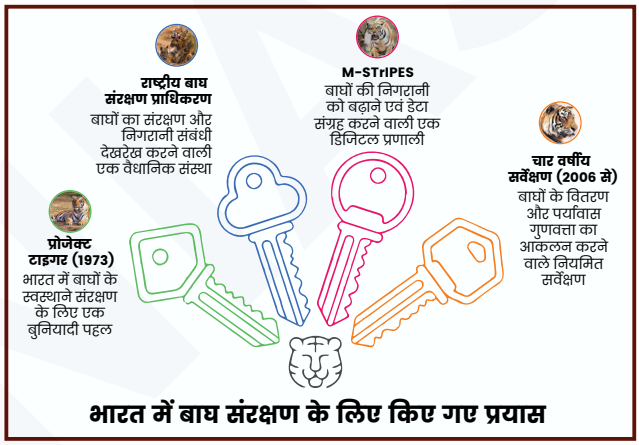

भारत में बाघ संरक्षण के लिए किए गए प्रयास

बाघों के संरक्षण की सफलता के लिए उत्तरदायी कारक

- **भूमि पृथक्करण और भूमि साझाकरण:** ये दोनों ही संतुलित रणनीतियां हैं। भूमि पृथक्करण (Land Sparing) रणनीति के तहत संरक्षण उद्देश्यों से कुछ क्षेत्रों को मानव-गतिविधि मुक्त रखा जाता है; जैसे-टाइगर रिजर्व या अभ्यारण्य। वहीं कुछ बाघ टाइगर रिजर्व और अभयारण्य जैसे संरक्षित क्षेत्रों से बाहर निकलकर बहुउद्देश्यीय जंगलों और क्षेत्रों में पहुंच जाते हैं। इन जगहों पर बाघ और इंसान सह-अस्तित्व में रहते हैं। इन्हें भूमि-साझाकरण (land sharing) क्षेत्र कहा जाता है।
- **सामाजिक-राजनीतिक स्थिरता:** इसने वन्यजीव संरक्षण को बढ़ावा दिया है, जिसका प्रमाण मानव-वन्यजीव संघर्ष नियंत्रण के बाद टाइगर रिज़र्व में बाघों की संख्या में वृद्धि है। उदाहरण के लिए- नागार्जुन सागर-श्रीशैलम, अमराबाद और सिमिलिपाल टाइगर रिज़र्व में बाघों की संख्या में वृद्धि देखी गई है।
- **सामुदायिक दृष्टिकोण:** केवल कम मानवीय घनत्व ही नहीं बल्कि बड़े मांसाहारियों के प्रति समुदाय की सहिष्णुता भी बाघों की संख्या में वृद्धि के कारक हैं। उदाहरण के लिए, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और कर्नाटक में बाघों की संख्या में वृद्धि हुई है।

बाघों की संख्या में वृद्धि का महत्त्व

- बाघ पारिस्थितिकी-तंत्र में **फ्लैगशिप एवं अम्ब्रेला प्रजाति** है। इससे अन्य मेगाफौना और पारिस्थितिकी-तंत्र को लाभ होता है।
- इससे **कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन और आक्रामक प्रजातियों के प्रति जैविक प्रतिरोध** में लाभ मिलता है।

वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत का स्वर्ण निवेश 2024 में 60% बढ़कर 1.5 लाख करोड़ रुपये हो गया

रिपोर्ट में इस तथ्य को उजागर किया गया है कि **भारत और चीन में बढ़े निवेश ने यूरोप एवं संयुक्त राज्य अमेरिका में स्लोडाउन को दूर करने** में मदद की है।

रिपोर्ट के मुख्य बिंदुओं पर एक नज़र

- **वैश्विक मांग:** 2023 तक के आंकड़ों के अनुसार इसमें **25% की वृद्धि** हुई है, जबकि **निवेश मांग में 29%** की बढ़ोतरी हुई है।
- **वैश्विक आपूर्ति:** मुख्य रूप से खदानों से होने वाले उत्पादन एवं पुनर्चक्रण के कारण इसमें **1% की वृद्धि** हुई है।
- **2025 के लिए आउटलुक:** सेंट्रल बैंक्स और गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड्स मांग को बढ़ा सकते हैं।
- **भारत:** RBI ने अपने **विदेशी मुद्रा भंडार में 73 टन सोना भंडारित** किया है। इससे सोने का हिस्सा रिकॉर्ड **11% तक बढ़** गया है।

भारत में सोने की मांग में वृद्धि के लिए जिम्मेदार कारक

- **समृद्धि एवं सामाजिक रुतबे का प्रतीक:** भारत में सोना अनुष्ठानों और परंपराओं का अभिन्न अंग है। जैसे- **हिंदू और जैन परंपराओं** में इसे एक **पवित्र धातु** माना जाता है।
- **निवेश और सुरक्षा:** विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में इसे पोर्टेबिलिटी में रखने के दृष्टिकोण से महत्त्व दिया जाता है।
- **शादियां: वार्षिक सोने की मांग का 50% हिस्सा** विवाह-संबंधी खरीदारी से आता है।

वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल (WGC) के बारे में

- **उत्पत्ति:** इसे 1987 में विश्व की अग्रणी स्वर्ण खनन कंपनियों द्वारा स्थापित किया गया था।
- **उद्देश्य:** स्वर्ण को एक रणनीतिक परिसंपत्ति के रूप में बढ़ावा देना तथा एक जिम्मेदार, पारदर्शी और सुलभ स्वर्ण आपूर्ति श्रृंखला को आगे बढ़ाना।
- **सदस्यता:** इसकी **32 स्वर्ण खनन कंपनियां** सदस्य हैं और ये **45 से अधिक** देशों में परिचालनरत हैं।
- **मुख्यालय:** इसका मुख्यालय **लंदन** में स्थित है।

स्वर्ण संसाधन की स्थिति

- **भारत:** 2022 के खान मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार **स्वर्ण अयस्क (प्राथमिक) के दृष्टिकोण से सबसे बड़े संसाधन बिहार (44%)** में अवस्थित हैं। इसके बाद **राजस्थान (25%), कर्नाटक (21%), पश्चिम बंगाल और आंध्र प्रदेश (3% प्रत्येक) तथा झारखंड (2%)** का स्थान है।
- **वैश्विक:** स्वर्ण भंडार के प्रमुख धारकों में शामिल हैं- **संयुक्त राज्य अमेरिका> जर्मनी> इटली> फ्रांस> चीन> स्विट्जरलैंड> भारत> जापान।**
- **शीर्ष निर्यातक:** वर्ल्ड इंटीग्रेटेड ट्रेड सॉल्यूशन, 2023 के अनुसार **जर्मनी> यूरोपीय संघ> स्विट्जरलैंड> संयुक्त राज्य अमेरिका> जापान।**

ई-नाम (राष्ट्रीय कृषि बाजार) प्लेटफॉर्म में 10 नवीन कृषिगत उत्पाद शामिल किए गए

इन **10 नए उत्पादों** को शामिल करने के साथ ही ई-नाम प्लेटफॉर्म पर उत्पादों की संख्या **231** तक पहुंच गई है। इन नए उत्पादों में **चने का आटा, सूखी तुलसी की पत्तियां, ड्रैगन फ्रूट,** आदि शामिल हैं।

- इस निर्णय से **किसान उत्पादक संगठनों (FAOs) को मूल्य-वर्धित उत्पादों (जैसे- हींग, भुने हुए चने का आटा, आदि)** के विपणन में भी मदद मिलेगी।

ई-नाम (e-NAM) के बारे में

- **ई-नाम एक अखिल भारतीय इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग पोर्टल है,** जो मौजूदा APMC मंडियों को आपस में जोड़ता है। साथ ही, कृषि उत्पादों के लिए **एकीकृत राष्ट्रीय बाजार** का निर्माण करता है।
- **लॉन्च:** इसे **2016** में लॉन्च किया गया था।
- **कार्यान्वयन एजेंसी:** कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत **लघु कृषक कृषि व्यापार संघ**।
- यह कोई **समानांतर विपणन प्लेटफॉर्म नहीं** है, बल्कि यह **मौजूदा APMC मंडियों की भौतिक अवसंरचनाओं का उपयोग** करता है।
  - **कृषि उपज बाजार समितियां (Agricultural Produce Market Committees: APMCs):** ये **कृषि उपज बाजार विनियमन अधिनियम, 1963** के तहत बनाए गए **राज्य APMC अधिनियमों** द्वारा शासित होती हैं। ये अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग होती हैं।
- **APMC मंडियों को ई-नाम के साथ एकीकृत करने** के लिए संबंधित राज्य को APMC अधिनियम में अग्रलिखित **3 सुधार करने होते हैं।** ये हैं- सिंगल ट्रेडिंग लाइसेंस (एकीकृत); बाजार शुल्क का एकल बिंदु पर संग्रहण; तथा मूल्य निर्धारण के तरीके के रूप में ई-नीलामी/ ई-ट्रेडिंग।

ई-नाम के लाभ

- **बाजार तक पहुंच में सुधार:** यह क्रेताओं और विक्रेताओं के बीच सूचना संबंधी असंतुलन को दूर करता है।
- **रियल टाइम में मूल्य खोज:** यह **वास्तविक मांग और आपूर्ति** के आधार पर होता है।
- **पारदर्शिता:** उपज की गुणवत्ता के आधार पर नीलामी प्रक्रिया और समय पर ऑनलाइन भुगतान।

कृषि क्षेत्रक में अन्य डिजिटल मार्केटिंग पहलें

मैनेज/ MANAGE- नवाचार और कृषि उद्यमिता केंद्र (CIA)
यह कृषि संबंधी स्टार्ट-अप्स को **डिजिटल मार्केटिंग प्रशिक्षण** प्रदान करता है।

कृषि विपणन के लिए एकीकृत योजना (एगमार्कनेट)
यह कृषि विपणन अवसंरचना के लिए **G2C ई-गवर्नेंस पोर्टल** है।

कृषि के लिए डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI)
यह कृषि के लिए **बाजार संबंधी जानकारी** प्रदान करता है।

ITC ई-चौपाल
यह **किसान और उपभोक्ता** के मध्य प्रत्यक्ष संपर्क को सुगम बनाता है।

पश्चिमी विक्षोभ के कारण उत्तर भारत में तापमान में गिरावट

पश्चिमी विक्षोभ (WD) **निम्न दाब वाली गैर-मानसूनी प्रणालियां** हैं। ये **मध्य अक्षांशीय क्षेत्रों** में उत्पन्न होते हैं और भारत में **शीतकालीन वर्षा** करते हैं। इसे स्थानीय रूप से **महावात** कहा जाता है।

- इनके लिए **'विक्षोभ'** शब्द का प्रयोग इसलिए किया जाता है, क्योंकि **निम्न दाब प्रणालियों** (वाताग्र, अवदाब और चक्रवात) के भीतर की पवन **अस्थिर** होती है।

पश्चिमी विक्षोभ के बारे में

- **उत्पत्ति:** पश्चिमी विक्षोभ भूमध्य सागर क्षेत्र में विपरीत विशेषताओं वाली **वायुराशियों के बीच परस्पर क्रिया** के कारण बनता है।
- **निर्माण प्रक्रिया: यूक्रेन पर मौजूद उच्च दाब क्षेत्र के चलते ठंडी ध्रुवीय पवनें गर्म क्षेत्रों में प्रवेश** करती हैं। इससे अस्थिरता उत्पन्न होती है और **चक्रवाती तूफान के लिए आदर्श दशाएं बन जाती हैं तथा पश्चिमी विक्षोभ** का निर्माण होता है।
- **उपोष्ण-कटिबंधीय पश्चिमी जेट (Subtropical Westerly Jet):** पश्चिमी विक्षोभ **मध्य अक्षांश (20° अक्षांश से ऊपर)** पर **उपोष्णकटिबंधीय पश्चिमी जेट (SWJ)** के साथ **पूर्व दिशा** की ओर आगे बढ़ते हैं।
  - **उपोष्ण-कटिबंधीय पश्चिमी जेट:** यह ऊपरी **वायुमंडल में 20° और 40° अक्षांश के बीच पश्चिम से पूर्व** की ओर चलने वाली अत्यंत **तीव्र विशाल पवन धारा (जेट स्ट्रीम)** है।
- **आर्द्रता के स्रोत:** ये प्रणालियां भारत में पहुंचने से पहले अपने मार्ग में **पश्चिम एशिया, ईरान, अफगानिस्तान और पाकिस्तान** से गुजरते हुए **कैस्पियन सागर (उत्तर) तथा फारस की खाड़ी (दक्षिण)** से अतिरिक्त आर्द्रता ग्रहण कर लेती हैं।
- **हिमालयी अवरोध:** हिमालय तक पहुंचने पर विक्षोभ अवरुद्ध हो जाते हैं। इससे **मैदानी इलाकों में वर्षा (पर्वतीय वर्षा) और पश्चिमी हिमालय में बर्फबारी** होती है।

पश्चिमी विक्षोभ के लाभ

सूखे का शमन:
ये **मानसून-पूर्व (मई-जून)** में जल की कमी को दूर करने में मदद करते हैं।

फसल हेतु लाभकारी:
ये **रबी फसलों** को आवश्यक आर्द्रता प्रदान करते हैं।

शीतकाल में वर्षा:
ये शीतकाल में वार्षिक वर्षा में लगभग 5-10% का योगदान करते हैं।

ग्लेशियर पुनःपूर्ति:
इनसे **हिमालयी हिमनदीय क्षेत्रों में बर्फ़बारी** होती है। इससे ग्लेशियर का अस्तित्व बना रहता है और नदियों में जल प्रवाह बना रहता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति ने अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC) पर प्रतिबंध लगाने वाले एक कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किए

यह आदेश उन व्यक्तियों और उनके परिवारों पर वित्तीय एवं वीज़ा संबंधी प्रतिबंध लगाता है, जो अमेरिकी नागरिकों या उसके इजरायल जैसे सहयोगियों की ICC जांच में सहायता करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC) के बारे में

- इसका मुख्यालय **नीदरलैंड के हेग** में स्थित है।
- यह विश्व का **पहला स्थायी अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय** है।
- **संस्थापक संधि:** इसे **रोम संविधि** के माध्यम से स्थापित किया गया है। रोम संविधि को 1998 में अपनाया गया था तथा यह 2002 में प्रभावी हुई थी।
- **ICC द्वारा निपटाए जाने वाले अपराधों के प्रकार:** नरसंहार, युद्ध अपराध, मानवता के खिलाफ अपराध और आक्रामकता के अपराध।
- **सदस्यता:** इसके 125 देश सदस्य हैं।
  - **भारत, इजरायल, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और चीन** रोम संविधि के पक्षकार नहीं हैं।
  - **हालिया सदस्य:** मलेशिया (2019) तथा यूक्रेन (2025)।
- **प्रबंधन: असेम्बली ऑफ़ स्टेट्स पार्टीज़ न्यायालय का प्रबंधन निगरानी और विधायी** निकाय है।
  - यह निकाय उन देशों के प्रतिनिधियों से बना है, जिन्होंने **रोम संविधि की पुष्टि** की है या उसे स्वीकार कर लिया है।
- **आधिकारिक भाषाएं:** अंग्रेजी, फ्रेंच, अरबी, चीनी, रूसी और स्पेनिश।

ICC के कामकाज में संरचनात्मक मुद्दे

- **पक्षकार देशों के सहयोग पर अत्यधिक निर्भरता,** क्योंकि ICC के पास गिरफ्तारी और साक्ष्य संग्रह के लिए कार्यकारी शक्ति का अभाव है।
- **राजनीतिक दबाव:** यह अक्सर **सत्ता की राजनीति और मानवाधिकारों के बीच फंस** जाता है। इसके अलावा, अक्सर कुछ देशों द्वारा विरोधियों को निशाना बनाने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (ICJ) ICC से किस प्रकार भिन्न है?

- ICJ की स्थापना 1945 में देशों के बीच विवादों को सुलझाने के लिए की गई थी। इसे संयुक्त राष्ट्र चार्टर द्वारा स्थापित किया गया है। यह **संयुक्त राष्ट्र का प्रधान न्यायिक अंग है।**
- **इसकी मूलतः दो भूमिकाएं हैं:-**
  - देशों के बीच उनके द्वारा प्रस्तुत **कानूनी विवादों को सुलझाता है।** इनमें संप्रभुता, सीमा विवाद, समुद्री विवाद, व्यापार, प्राकृतिक संसाधन आदि शामिल हैं।
  - विधिवत अधिकृत संयुक्त राष्ट्र अंगों और विशेष एजेंसियों द्वारा **संदर्भित कानूनी मामलों पर सलाहकारी राय** देना।

गूगल ने अपनी विविधता, समानता और समावेशन (DEI) पहलों की समीक्षा के साथ ही विविधता-आधारित नियुक्ति संबंधी लक्ष्यों को समाप्त कर दिया

हाल ही में, **मेटा, अमेज़न** जैसी कंपनियां DEI पहलों को समाप्त कर रही हैं। **विविधता, समानता और समावेशन (Diversity, Equity and Inclusion: DEI) पहलों** से क्या आशय है?

- DEI एक व्यापक शब्दावली है, जिसका उपयोग उन नीतियों और पहलों का वर्णन करने के लिए किया जाता है, जो व्यक्तियों के **विविध समूहों के प्रतिनिधित्व एवं भागीदारी को बढ़ावा** देती हैं। जैसे- जेंडर, नस्ल, सेक्शुअल ओरिएंटेशन आदि।

कार्यस्थल पर DEI का महत्त्व

- **भेदभाव न करना:** यह एक **मौलिक मानवाधिकार है,** जो गुणवत्तापूर्ण नियोजन और श्रमिक कल्याण के लिए आवश्यक है।
- **व्यवसाय विकास:** यह **रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा** देता है। साथ ही, यह कंपनियों में प्रतिभावान लोगों को आकर्षित करता है और कंपनी में उनके बने रहने को बढ़ाता है। इससे कर्मचारी के जुड़ाव और कंपनी की प्रतिष्ठा को प्रोत्साहन मिलता है।

DEI पहलों में कटौती या समाप्त करने के प्रभाव

- **स्वाभाविक पूर्वाग्रहों को बढ़ावा देना:** DEI में कटौती से विचारों में एकरूपता हो सकती है, जिससे पूर्वाग्रह उत्पन्न हो सकते हैं। जैसे कि **AI में एल्गोरिदमिक पूर्वाग्रह।**
- **कार्यस्थल पर भेदभाव:** कर्मचारियों को अवसरों, पदोन्नति आदि **तक पहुंच में भेदभाव का सामना** करना पड़ सकता है।

DEI को बढ़ावा देने वाली पहलें

- **संयुक्त राष्ट्र ग्लोबल कॉम्पैक्ट के 10 सिद्धांतों में से सिद्धांत क्रमांक 6:** कंपनियों को **नियोजन और व्यवसाय** के संबंध में **भेदभाव को समाप्त** करना चाहिए।
- जेंडर और दिव्यांगता पर लागू **नेशन वर्कप्लेस कोटा/ टार्गेट्स। जैसे कि ऑस्ट्रिया, जर्मनी** में अपनाया गया है।

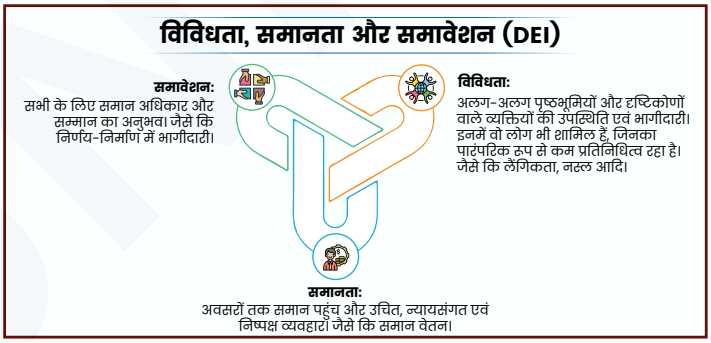

अन्य सुर्ख़ियां

शतावरी

आयुष मंत्रालय ने "**शतावरी- बेहतर स्वास्थ्य के लिए**" नामक **अभियान** शुरू किया है। इसका उद्देश्य शतावरी के **स्वास्थ्य संबंधी लाभों के बारे में जागरूकता** बढ़ाना है।

शतावरी (शतावरी रेसमोसस) के बारे में

- शतावरी का अर्थ है "**सौ रोगों का इलाज करने वाली**"।
- यह एक **औषधीय पादप है, जो 1-2 मीटर ऊंचाई** तक बढ़ता है।
- **उपयोग:** इसकी **सूखी जड़ें व पत्तियां आयुर्वेदिक चिकित्सा में औषधि** के रूप में उपयोग की जाती हैं।
- **पर्यावास: उष्णकटिबंधीय जलवायु और कम ऊंचाई वाले छायादार स्थान।**
  - यह **एशिया, ऑस्ट्रेलिया और अफ्रीका** में पाया जाता है।
- **स्वास्थ्य संबंधी लाभ:**
  - महिला जनन स्वास्थ्य में सुधार करता है;
  - हार्मोनल संतुलन बनाए रखने में सहायक है;
  - अल्सर को ठीक करने में मदद करता है;
  - ऊर्जा व दीर्घायु (Vitality & Longevity) को बढ़ावा देता है;
  - रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) को मजबूत करता है;
  - तंत्रिका संबंधी विकारों (Nervous Disorders) के उपचार में लाभदायक है आदि।

क्विपु (Quipu) सुपरस्ट्रक्चर

खगोलविदों ने **ब्रह्मांड में सबसे बड़ी ज्ञात संरचना या स्ट्रक्चर की पहचान** की है। इसे **क्विपु** नाम दिया गया है।

क्विपु सुपरस्ट्रक्चर के बारे में

- इस सुपरस्ट्रक्चर का द्रव्यमान **200 क्वाड्रिलियन सौर द्रव्यमान** के बराबर है तथा इसका विस्तार **1.3 बिलियन प्रकाश वर्ष** से अधिक है।
- **सुपरस्ट्रक्चर:** यह आकाशगंगा क्लस्टरों और सुपरक्लस्टरों के समूहों वाली अत्यंत विशाल संरचना या स्ट्रक्चर होते हैं।

सुपरस्ट्रक्चर के प्रभाव:

- **कॉस्मिक माइक्रोवेव बैकग्राउंड (CBM):** सुपरस्ट्रक्चर CBM में उतार-चढ़ाव उत्पन्न कर सकते हैं। CBM वस्तुतः बिग बैंग परिघटना की बची हुई विकिरण हैं।
- **हबल कॉन्स्टैंट:** सुपरस्ट्रक्चर, ब्रह्माण्ड के विस्तार दर की सटीक माप में गड़बड़ी उत्पन्न करती हैं।
- **ग्रेविटेशनल लेंसिंग** के कारण **आकाश की छवियां विकृत** हो जाती हैं।
  - **ग्रेविटेशनल लेंसिंग** एक परिघटना है। इसके अंतर्गत **अधिक दूर से चमकने वाले प्रकाश** को उसके स्रोत और प्रेक्षक के बीच **आने वाले किसी पिंड (जैसे कि आकाशगंगा या क्वासर) के गुरुत्वाकर्षण द्वारा मोड़** दिया जाता है। पिंड का गुरुत्वाकर्षण अपने आस-पास के स्पेस-टाइम में इतनी वक्रता (curvature) उत्पन्न कर देता है, कि उससे प्रकाश अपने पथ से विचलित हो जाता है।

क्रसटेशियन

ब्रायोस्पिलस (इंडोब्रायोस्पिलस) भारातिकस वंश की एक नई वाटर फली प्रजाति (क्रसटेशियन) पाई गई है।

क्रस्टेशियन के बारे में

- ये अधिकतर जलीय आर्थ्रोपोड्स होते हैं। इनमें श्वसन के लिए गलफड़े होते हैं।
- उदाहरण: केकड़े, श्रिम्प, लॉबस्टर, क्रेफ़िश, वुडलाइस आदि।
- शरीर के भाग: इनमें सिर, वक्ष और उदर शामिल हैं।
- पर्यावास: मुख्यतः जलीय, कुछ अर्धस्थलीय और स्थलीय प्रजातियां।
- पारिस्थितिक भूमिका: ये समुद्री खाद्य श्रृंखला में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, फाइटोप्लांकटन से लेकर मछलियों और व्हेल तक पोषण पहुंचाते हैं। साथ ही, पोषक तत्वों के पुनर्चक्रण में मदद भी करते हैं।
  - उदाहरण के लिए: डायटम-क्रस्टेशियन-हेरिंग्स।

अटाकामा मरुस्थल

प्रकाश प्रदूषण के चलते अटाकामा मरुस्थल में स्थापित विश्व के सबसे बड़े टेलीस्कोप के समक्ष समस्या उत्पन्न हो गई।

अटाकामा मरुस्थल (उत्तरी चिली, दक्षिण अमेरिका) के बारे में

- अवस्थिति: यह उत्तरी चिली (दक्षिण अमेरिका) में स्थित है। यह मरुस्थल एंडीज पर्वत और प्रशांत महासागर के मध्य अवस्थित है।
- विशेषताएं: इसमें साल्ट पैंस, एल्यूवियल फैन्स, टीले और ज्वालामुखी शंकु आदि शामिल हैं।
- जलवायु एवं पर्यावरण: यह पृथ्वी पर सबसे शुष्क स्थानों में से एक है।
- शुष्कता का कारण: प्रशांत तट से बहने वाली हम्बोल्ट धारा। यह एक ठंडी समुद्री धारा है।
- महत्त्व: आसमान साफ होने के कारण यह खगोलीय पर्यवेक्षणों के लिए काफी उपयोगी है।

शिशुधानी जीव

इन विट्रो फर्टिलाइजेशन (IVF) तकनीक का उपयोग करके सफलतापूर्वक पहला कंगारू भ्रूण तैयार किया गया है। इससे शिशुधानी प्रजातियों की रक्षा करने में मदद मिलने की उम्मीद है।

शिशुधानी (Marsupials) जीव के बारे में

- यह स्तनधारी जीवों का एक समूह है। इसमें 330 से अधिक प्रजातियां शामिल हैं।
- उदाहरण: कोआला, बैंडिकूट, वॉम्बैट, वॉलबी, पॉसम आदि।
- इन्हें महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत का महत्वपूर्ण साक्ष्य माना जाता है।
  - पहले ये उत्तरी अमेरिका में रहते थे और फिर महाद्वीपीय विस्थापन के कारण दक्षिण अमेरिका, अंटार्कटिका और ऑस्ट्रेलिया में फ़ैल गए।
- इनके शरीर में एक थैली (Pouch) होती है। इसमें अपूर्ण विकसित बच्चे को पोषण और सुरक्षा मिलती है, क्योंकि इनका गर्भनाल (placenta) अल्पकालिक होता है।
  - सभी शिशुधानी प्राणियों में थैलियां नहीं होती हैं।
- वितरण: लगभग 2/3 ऑस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं, जबकि 1/3 दक्षिण अमेरिका में पाए जाते हैं।

पिनाका मल्टीपल रॉकेट लॉन्च सिस्टम (MRLS)

रक्षा मंत्रालय ने पिनाका MRLS के लिए गोला-बारूद खरीद हेतु 10,147 करोड़ रुपये के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए।

पिनाका MRLS

- विकासकर्ता: रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO)।
- प्रकार: पिनाका एक "मल्टी-बैरल रॉकेट लांचर" है। यह 44 सेकंड में 12 रॉकेट दाग सकता है।
- क्षमता: आर्टिलरी की कार्रवाइयों के लिए विस्तारित दूरी तक सटीक हमले की सुविधा प्रदान करता है।
- रेंज: पिनाका MK-II रॉकेट की रेंज 60 कि.मी. है।
- महत्त्व: आर्टिलरी रॉकेट रेजिमेंट्स का आधुनिकीकरण करने में; लंबी दूरी तक हमला करने की क्षमता विकसित करने में; और युद्धक्षेत्र प्रभावशीलता में वृद्धि करने में।
- निर्यात: भारत ने पहली बार आर्मेनिया को पिनाका रॉकेट बेचे हैं।

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (UNHRC)

संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद इजरायल भी संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (UNHRC) से हट गया। इजरायल ने इसका कारण उसके खिलाफ पूर्वाग्रह बताया।

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (UNHRC) के बारे में

- यह मानवाधिकार पर चर्चा के लिए संयुक्त राष्ट्र का अंतर-सरकारी निकाय है।
- मुख्यालय: जिनेवा (स्विट्जरलैंड) में स्थित है।
- प्रमुख कार्य: मानवाधिकारों के प्रति सार्वभौमिक सम्मान को बढ़ावा देना और उल्लंघन होने पर समाधान करना।
- स्थापना: इसका गठन 2006 में मानवाधिकार आयोग (1946-2006) की जगह पर किया गया था।
- संरचना: इसके 47 सदस्य हैं। इसके सदस्य संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 3 वर्ष के कार्यकाल के लिए चुने जाते है। इसकी सदस्यता सीटों के समान भौगोलिक वितरण पर आधारित होती है। भौगोलिक प्रतिनिधित्व की अवधारणा संतुलित वितरण सुनिश्चित करती है।
- सार्वभौमिक आवधिक समीक्षा (UPR) रिपोर्ट: इसमें सभी संयुक्त राष्ट्र सदस्य देशों के मानवाधिकार रिकॉर्ड का आकलन किया जाता है।

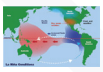

ला नीना

ला नीना की परिघटना के बावजूद भी 2025 का जनवरी महीना अब तक का सबसे गर्म जनवरी महीना रहा है।

ला नीना के बारे में

- ला नीना, एक जलवायु संबंधी परिघटना है, इसमें अल नीनो के विपरीत दशाएं होती हैं।
- ला नीना में उष्णकटिबंधीय प्रशांत में व्यापारिक पवनें बहुत प्रचंड हो जाती हैं। इसके परिणामस्वरूप, मध्य और पूर्वी प्रशांत महासागर में ठंडे जल का असामान्य से अधिक संचय हो जाता है ।
- भारतीय जलवायु पर ला नीना के प्रभाव
  - पूरे भारत में दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान सामान्य से अधिक वर्षा होती है।
  - सर्दियों के दौरान तापमान सामान्य से कम हो जाता है।

सुर्ख़ियों में रहे स्थल

ग्रीस (राजधानी: एथेंस)

- हाल ही में, ग्रीस के सेंटोरिनी द्वीप पर भूकंप की कई घटनाएं दर्ज की गई।

ग्रीस के बारे में

- भौगोलिक अवस्थिति:
  - अवस्थिति: यह बाल्कन प्रायद्वीप का सबसे दक्षिणी देश है।
  - सीमावर्ती राष्ट्र: इसकी स्थलीय सीमाएं अल्बानिया, बुल्गारिया, तुर्की (पूर्व) और मैसेडोनिया गणराज्य से लगती हैं।
  - प्रमुख जल निकाय: इसके पूर्व में एजियन सागर, दक्षिण में भूमध्य सागर और पश्चिम में आयोनियन सागर अवस्थित हैं।
  - समुद्री सीमाएं: साइप्रस, मिस्र, इटली और लीबिया से लगती हैं।
- भौगोलिक विशेषताएं:
  - पर्वत: पिंडोस पर्वत। यह मुख्य भूमि ग्रीस का कोर बनाने वाली केंद्रीय पर्वत श्रृंखला है।
  - उच्चतम बिंदु: माउंट ओलंपस।
  - जलवायु: भूमध्यसागरीय जलवायु।
  - अन्य विशेषताएं:
    - कोरिंथ स्थलसंधि: पेलोपोनिसोस को मुख्य भूमि ग्रीस से जोड़ता है। थर्मोपाइलेस मध्य ग्रीस में एक संकीर्ण तटीय दर्रा है।
    - क्रेते: ग्रीस का सबसे बड़ा द्वीप है।